Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 03/April/2024 IJRAW: 2024; 3(5):20-21 Accepted: 07/May/2024

जनसंघर्ष एवं जलसंघर्ष की कथा: नागार्जुन कृत 'वरुण के बेटे'

*[1]अनुष्का प्रदीप पचांगे

*[1]शोध-छात्रा, हिन्दी विभाग, एस.एन.डी.टी.महिला विद्यापीठ, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश

"वरुण के बेटे" उपन्यास वैद्यनाथ मिश्र उर्फ नागार्जुन कृत एक आंचलिक उपन्यास है। आलोच्य उपन्यास में नागार्जुन जी ने मछुआरों की कठिन जिन्दगी का दस्तावेज प्रस्तुत किया है। यह जिन्दगी जो गरीबी और आभावों के बीच भी अपनी जिजीविषा को जीवंत रखती है। नारी पात्र मधुरी के माध्यम से नारी अस्मिता को भी उकेरने का सफल प्रयास किया है।

मुख्य शब्द: नागार्जुन, मछुआरा, मधुरी, वरुण के बेटे, बस्ती खुरखुन, गरीबी, परिवेश आदि।

प्रस्तावना

सुविख्यात प्रगतिशील कवि-कथाकार नागार्जुन का बहुचर्चित उपन्यास है "वरुण के बेटे" नागार्जुन का छोटा आंचलिक उपन्यास है। यह उपन्यास बड़े-बड़े गड्ढों-पोखरों पर निर्भर मछुआरों की कठिन जीवन-स्थितियों को अनेकानेक उन्तरंग विवरणों सहित उकेरता है। ऐसा लगता है, लेखक बरसों उन्हीं के बीच रहा है-वह उनकी तमाम अच्छाइयों-बुराइयों से गहरे परिचित है और उनके स्वभाव-अभाव को भी भली-भाँति पहचानता है। उनके उपन्यास एक विशिष्ट अर्थ में ही आंचलिक हैं। 'वरुण के बेटे' मधुआरे अपनी रोजी-रोटी चलाने के लिए आपदाओं के मुँह में घुसते हैं, किस प्रकार वे संघर्षों से जूझते हैं। इस संघर्षशीलता के बावजूद जीवन के अभावों से इनका पिंड नहीं छूटता। तभी तो वह खुरखुन और उसके परिवार को केन्द्र में रखते हुए मछुंआरा बस्ती मलाही-गोंढियारी के कितने ही स्त्री-पुरुषों को उपन्यास में अनुभव का स्थायी हिस्सा बना देता है।उनके जीवन की विसंगतियों तथा कठिनाइयों को फिर चाहे वह पोखरों पर काबिज शोषक शक्तियों के विरुद्ध खुरखुन की अगुवाई में चलनेवाला संघर्ष हो अथवा माधुरी-मंगल के बीच मछलियों-सा तैरता और महकता प्यार हो । कभी-कभी यह लगता है कि कहीं हम स्वयं को कभी खुरखुन की स्थिति में पाते हैं तो कभी-कभी मधुरी-मंगल की दशा में। वस्तुतः नागार्जुन अपने कथा-परिवेश को कहकर नहीं, रचकर उजागर करते हैं। एक पूरी धरती, एक पूरा परिवेश और फिर शब्दांकुरों की शक्ल में विकसित होती हुई कथा। इस सन्दर्भ में उनका "वरुण के बेटे" यह उपन्यास एक अप्रतिम स्थान रखता है।

'वरुण के बेटे' उपन्यास में संघर्ष का एक और स्थल है वह भी प्रत्यक्ष रूप से जल से ही सम्बंधित है । जल जहाँ एक तरफ इन्हें बसाता है तो दूसरी ओर इसी जल के कारण पूरा गाँव बह जाता है । सारा इलाका एक भयंकर त्रासद में जीता है, लोग अन्न के दाने-दाने के लिए तरसते ही हैं साथ ही उन्हें सिर छुपाने की जगह के लिए भी अक्सर परेशान रहते हैं। सरकारी सहायता कैंप तो मात्र उनके दुःख-दर्द पर नमक छिड़कने काम भर करते हैं। नागार्जुन ने इन सन्दर्भों में उभरते आक्रोश को संयत दिशा प्रदान करने का प्रयास करते। नागार्जुन ने बड़े ही अंदाज से इन मछुवारों की ज़िंदगी को समीपी दृष्टि से आँका है। पानी की गहराइयों से जूझनेवाले यह लोग बड़े हिम्मती होते हैं। खुरखुन सारे देहात में प्रसिद्ध था, उनका जीवन बड़ा ही संघर्षशील है।नागार्जुन ने इस उपन्यास के माध्यम से मछुआरों की जीवन-शैली, उनके रहन-सहन और उनके उन सरोकारों की ओर झाँकने का प्रयास किया है जिनसे उनकी रोजी-रोटी की बुनियाद जुड़ी हुई है।'वरुण के बेटे' की पूरी कथा एक छोटे मछुआरे खुरखुन और उसके परिवार के इर्द-गिर्द घुमती है। नागार्जुन ने इस उपन्यास में खुरखुन की बिटिया मधुरी का प्रेम प्रसंग भी चित्रित किया है पर यह प्रेम उपन्यास की मुख्यधारा में नहीं है। मधुरी प्रेम तो करती है पर समाज के कायदे कानून के भीतर इसलिए न तो वह अपने प्रेमी के न ही खुद के परिणय सूत्र में बंधने के पहले कोई एतराज जताती है।

उपन्यास की पूरी कथा एक छोटे मछुवारे खुरखुन और उसके परिवार के इर्द-गिर्द की कथा है। मछुआरों में बड़े और छोटे मछुआरों में वही भेदभाव है जो जो खेती करनेवाले भूमिहीन और जमीन वाले किसान के बीच होता है । इस उपन्यास के नायक खुरखुन की गरीबी और जीवन संघर्ष का चित्रण करते हुए लेखक लिखते हैं-"पुवाल बिछे थे कोने में, उन पर फटी पुरानी बोरी बिछी थी। एक जवान लडकी और नाग, धडंग बच्चे बेतरतीब सोये थे औधना के नाम पर कथरी गुदड़ी के दो तीन छोटे-बड़े टुकडे उन शरीरों को जहाँ तहाँ ढक रहे थे। दूसरे में चूल्हा-चौका। तीसरे में आनाज रखने के के कूँड और कुठले। चौथा कोना खाली मछलियाँ पकड़ने और फँसाने के औजार भीत की खूँटियों से टंगे थे। गाँज, टापी, सहत, सरैल'किस्म किस्म कर। जालों के अधूरे टुकड़े... यानी खुरखुन का समूचा संसार ही तेरह फुट लम्बे और नौ फुट लम्बे घर में अटा पड़ा था।" [1]

*Corresponding Author: अनुष्का प्रदीप पचांगे

उपन्यास का कथानक आंचलिक है यह अन्य उपन्यासों जैसा बिखराव नहीं रखता। कथानक गाँव के दुःख-दर्द को अभिव्यक्त करता हुआ तेजी से अपना सफर तय करता है। पात्र भी इने गिने हैं- मोहन माँझी, खुरखुन, मधुरी आदि तो मुख्य हैं। नारी चेतना की नई छवि हमें अनपढ़ मधुरी में दिखलाई पड़ती है। ससुराल से शराबी ससुर की हरकतों से दुखी हो दूसरे-तीसरे दिन ही घर लौट आती है। गोहियारी में आकर पिता का हाँथ बटाती है।

कृति की रचनाधर्मिता का सवाल लेखकीय दृष्टि से जुड़ा हुआ होता है। कृति की सार्थकता उस दृष्टि-विशेष के प्रसार से ही सन्निहित होती है। 'वरुण के बेटे' में श्रमदान की कृत्रिमता पर व्यंग्य किया गया है किसी के किनारे श्रमदानियों के महत्व के कारण जंगल में मंगल हो जाता है। उनको हर सुविधा प्रदान की जाती है।

यह सब भूदान और श्रमदान न रहकर दिखावा बनकर रह गए हैं। गाँव के लोगों में कर्तव्यनिष्ठा है तो शहरियों में बनावटीपन। इसी को उद्घाटित करता हुआ लेखक सूचित करता है-"खाते पीते परिवारों के शौकिया श्रमदानी सज्जनों की बात ही और थी, उनकी सुविधा के अनेक साधन कोसी किनारे जुट गए थे। चाय-बिस्कुट, पान-सिगरेट, शरबत....आस-पड़ोस के परिचित काँग्रेसी नेताओं की सिफारिश से वे पटना या दिल्ली से आये ऊँचे पदाधिकारी के साथ भीड़ में खड़े हो जाते और फोटो खिंच जाती। इन लोगों का श्रमदान क्या था बैठे-ठाले का अच्छा खासा मनोरंजन था"

सीधे और सरल शब्दों में लेखक में आज की कृत्रिमता पर प्रचारवादिता और एक आज के नकलीपन पर गहरी चोट की है। हमारे नेताओं की दृष्टि देश के सुधार या गाँव के सुधार पर नहीं टिकती वह तो सभा जुलूसों के आयोजनों में निरर्थक भूमिका अदा करने में राष्ट्र का समय और धन बर्बाद करते हैं।

सच तो यह है कि नागार्जुन बाबा किरदारों में व्यक्तिगत सुख की आकांक्षा से से ज्यादा अपने समाज का कल्याण सर्वोपरि है। यही वजह है कि ससुराल से पिट-पीटाकर मधुरी जब मछुआरों के संगठन में काम करने की इच्छा जताती है तो वह उसके पिता न केवल उसे इसकी इज़ाजत देता है बल्कि बेटी को इस रूप में देखकर फर्क महसूस करता है। लेखक उपन्यास में पाठकों को इलाके के गढ़-पोखर का परिचय कुछ इस प्रकार से कराते हैं-"केले के मोटे-मोटे थंब, कटे हुए। सात-आठ रहे होंगे। छै-छै हाथ लम्बे। वे एक-दूसरे से सटाकर बांधे गए थे। अच्छी-खासी नाव का काम दे रहे थे। धुप्प आंधेरा, कड़ाके की सर्द। नीचे अथाह पानी। उपर नक्षत्र-खचित नील आकाश। परछाई में तारे जंच नहीं पा रहे थे क्यूंकि छोटी-बड़ी हिलकोरें पानी को चंचल किये हुई थीं। कदली-थंभो की यह नाव पोखर की छाती पर हचकोले खा रही थीं। बदन की समूची ताकत बाहों में बटोरकर जाल फेंकते वक्त इसका आधा हिस्सा पानी के अंदर धँस जाता था और तब उस अतिरिक्त दबाव से जलराशि की मोटी-मोटी तरंग-मालाएं एक के बाद एक मिनिटों तक उमड़ती रहती थी। कोई मामूली तलैया या बागन के अन्दर का साधारण तो थी नहीं, वह अपने इलाके का प्रख्यात जलाशय 'गढ़-पोखर' था। चरों तरफ के भीड़ किनारों के बड़े बड़े कछार, बेच का पानीवाला बड़ा हिस्सा-कुल मिलकर पचास एकड़ जमीन छेके हुए था गरोखर।" [2] वैसे देखा जाए एक ज़माने में गावों के बीच के ये ये गढ़ैया तालाब जमीदारों की निजी मिलकियत का हिस्सा थे। पर आजादी के बाद नए कानून के आ जाने से जब इनपर भू-स्वमियों का अधिकार ख़त्म होने को आया तो औने-पौने में उन्होंने इन जलाशयों में मछली पकड़ने की बंदोबस्ती गैरकानूनी रूप से इलाके के दबंगों को सौंप दी। उपन्यासकार ने 'वरुण के बेटे' उपन्यास में इस बदलते परिवेश में उन मछुवारों की कहानी कहनी चाही है जिन्होंने सामूहिक रूप से एकजुट होकर अपने पर होते अन्याय के खिलाफ कमर कसी और अपने उद्देश में काफी हद तक सफल भी हुए हैं।

बाबा नागार्जुन ने इस छोटे से उपन्यास में मछुआरें जीवन का बेहद जीवंत विवरण दिया है। कहानी शुरू होती है एक छोटे परिवार से उनके रोजमर्रा के कामकाज से और अंत तक पूरे चित्र की रुपरेखा खिंच जाता है। जीवंत पात्रों के माध्यम से लेखक ने 50-60 दशक के सरकारी नीतियों, उससे प्रभावित जन साधारण और देश की स्थिति का लेखा प्रस्तुत किया है। आजादी के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से विकसित राजनैतिक चेतना को नागार्जुन ग्रामीण क्षेत्रों की किसान सभाओं, ग्राम कमेटियों के माध्यम से अपने अपने उपन्यासों में अंकित करते हैं। 'वरुण के बेटे' उपन्यास में पिछड़े वर्ग के मोहन माँझी को राजनैतिक चेतनाशील प्रतिनिधि चरित्र के रूप में दिखाया है। प्रगतिशील है और विभिन्न किस्म के संगठनों के बीच विचारधारा के मर्म को वह आसानी से कार्यकर्त्ता के रूप को देखा जा सकता है। वह अपने थैले से किसान-सभा की रसीदें निकालकर उसके उद्देश्यों को बताता है।

आंचलिक उपन्यासों की एक खासियत होती है कि वो अपने इस अंचल के लोकगीतों से परिचय करवाते हैं हैं। आलोच्य उपन्यास में नागार्जुन जी ने भी उस अंचल के लोकगीतों का चित्रण किया है। उदहारणस्वरुप मंगल की याद में मधुरी का यह कथन-

जिनगी भेल पहाड़, उमिर भेल काल!
नइ फेक नइ फेक आहे मोर दिलचन
नेहिया पिरितिया के जाल
आव आव देखि जा हाल
उमिर भेल काल!

निष्कर्ष

अस्तु कहा जा सकता है कि, 'वरुण के बेटे' हिंदी और मैथिल के जाने-माने कवि व उपन्यासकार नागार्जुन का एक लघु उपन्यास है। बिम्ब और प्रतीक विधान जिनसे जीवन की.. स्थितियों को उजागर किया जाता है। 'वरुण के बेटे' में यतिकिंचित हो दिखाई पड़ती है।

नागार्जुन के उपन्यास का विश्लेषण करने के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्होंने मिथिलांचल के जनजीवन को बड़े निकट से देखा है तथा परखा है। किसान-मजदूरों की पीड़ा, वेदना, संत्रास, घुटन और शोषण को उन्होंने स्वयं भी भोग है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. वरुण के बेटे-नागार्जुन: प्रकाशन: राजकमल प्रकाशन: संस्करण: १९५७: पृष्ठ सं-२७
2. वरुण के बेटे-नागार्जुन: प्रकाशन: राजकमल प्रकाशन: संस्करण: १९५७: पृष्ठ सं-५२
3. वरुण के बेटे-नागार्जुन: प्रकाशन: राजकमल प्रकाशन: संस्करण: १९५७: पृ ष्ठ सं-२७
4. समन्वय पूर्वोत्तर: अंक २५ अप्रैल-जून २०२२
5. आधुनिक हिन्दी उपन्यास-१ डॉ.गोपाल राय
6. हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में जीवन सत्य।